Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 08/04/2020 Accepted on : 22/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

गरीबदास : एक नुमाइन्दा किरदार

Poet. Prof. Dr. Manu
Professor, Sree Sankaracharya Universityof Sanskrit, kalady Regional Centre, Payyanur, Kerala.
Email - drmanguhazal@gmail.com,

No political government has shown the courage to curb the population. It should have been amended ten to twenty years ago.

Today, the workers have come down on the road. If there is no work, Government should have provided food. Even the democratic Leaders and Literary writers of the workers and pesants never demanded that the population be controlled for the welfare of the Indians, and save to our beloved country.

'आबादी भूख की बुनियादी नाम है
भूख और बीमारियाँ
हमारे हर वक़्त के दुश्मन हैं
वे हमें सोने नहीं देंगे, जीने नहीं देंगे
हमें अमन भी नहीं देंगे।'
Poet. Prof. Dr .Manu

दुनिया और इंसानी जिंदगी को छोड़कर साहित्य का कोई अहमियत नहीं है। इंसान समाज में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने केलिए तड़पते रहते हैं। जाने अनजाने यह बात कभी कभी लोगों के लिए सोच विचार का बीज बन जाता है। वक्त वक्त पर समाज में होने वाले हादसे, अकाल, बाढ़, शोषण आदि कवि के ज़हन में जमकर आखिर नज़्म, अफसाना, उपन्यास आदि में से किसी का शक्ल हासिल कर देता है। जब कभी कोई मंज़र सामने आता है लोगों के दिल में उतरने वाले एहसास अलग अलग होते हैं। यह अलगापन ही साहित्यकार की शख्सियत को जन्म देता है। हर साहित्यकार का, सोचते रहने का रवैया अलग होगा, लिखने का रवैया अलग होगा। यह रवैया साहित्यकारों को एक दूसरे से अलग अलग पहचान प्रदान कर देता है l सब साहित्यकार 'जन' के बारे में लिखते हैं। 'जन' ही सब अदब का मरकज़ है, मगर वह सब रचनाएं 'जनवादी' नहीं बन सकतीं। 'जन' अत्यन्त व्यापक लफ्ज़ है, मगर मार्क्स की नजर ने उस लफ़्ज़ के व्यापक माने के सरहद को बख़ूबी सीमित कर दिया है। 'जन' का मतलब अब सर्वहारा, श्रमजीवी, किसान, मज़दूर और निचले तबके के जन या जम्हूर हैं।

गहराई से परखें तो जाना जाएगा कि आजादी के बाद के उपन्यास के मैदान में नागार्जुन एक मील का पत्थर है। नागार्जुन के सामने आम लोगों के दर्द, अफसोस, पीड़ा, शोषण आदि ही उभर आये हैं। किसान, मज़दूर और निचले तबक़ों की मसाइल को नागार्जुन ने अपनी मसाइल समझ कर साहित्य के नक्शे में खींचने की कोशिश की है। इसमें जरूर ही उन्होंने कामयाबी की नसीब हासिल की है। यह उनकी कविताओं में ही नहीं, उनके उपन्यासों में भी देख सकते हैं। साहित्य के मैदान में पैर रखने वाले मासूम पाठक भी कैसे 'प्रेत के बयान' को भूल सकते हैं ? कैसे 'अकाल के बाद' को भूल सकते हैं ? और वैसे ही उनके उपन्यास 'गरीबदास' को भूल सकते हैं ? इसलिए जनवाद का मकसद ही नागार्जुन का मकसद है, नागार्जुन का विचार ही जनवाद का विचार है।

सब साहित्यकार 'जन' के बारे में लिखते हैं पर उनकी रचनाओं को जनवादी साहित्य मान नहीं सकते। जन का माना जनवादी के मामले में बहुत कुछ सीमित होकर सर्वहारा, श्रमजीवी, निचले व मध्य निचले तबके के लोगों तक ही सीमित हो गया है। यानी जनवाद में 'जन' के अर्थ का संकोच हुआ है। प्रगतिवाद में जनवाद वाकिफ है और वैसे ही प्रगतिशील में जनवाद मौजूद है। मगर इसका माना यह नहीं है कि जनवाद प्रगतिवादी है, प्रगतिशील है, सुरखवाद है, साम्यवाद है, मार्क्सवाद है। मगर इंसान की खासियतों व खामियों को अपने में समेटते हुए जनवाद ने अपनी एक जगह, अपना एक मुकाम, और अपनी एक अस्मिता हिंदी साहित्य में बनाया है और अपने दायरे के भीतर आनेवाले आम लोगों के दर्दनाक वाक़ए को अपने तरीके से खौफनाक ढ़ंग से जनवादी साहित्यकार अभिव्यक्त कर देने पर वह अदबी दुनिया में मशाल की तरह बन जाता है। मार्क्सवाद जनवाद को परवरिश करेवाले खदोपानी या खादाब है। एक और बात यहां फिकरमंद है कि अपने दायरे के भीतर आनेवाले दलित, मज़दूर, किसान व आम लोगों की सुविधा व सहूलियत का बयान जनवादी कलाकार बहुत बहुत कम ही करते हैं। उनकी सरहद हीन समस्याओं, विवशताओं व परेशानियों का बयान ही जनवादी कलाकारों का दिल पसंदीदा काम है।

खुशी दिलाना जनवाद का फ़र्ज़ है । मगर यह आसान काम नहीं है । क्योंकि बाढ़ सी बढ़ती आबादी पर रोकधाम अब भी नहीं लगाई गयी है । साफ सफाई, मसाइल ए आलूदगी, खाने की कमी, बेघरों की तड़प की समस्या बढ़ बढ़ जाती हैं । आबादी पर रोकधाम लगाने की हिम्मत किसी राजनैतिक सरकार ने अब तक नहीं दिखायी है । यह दस बीस साल पहले करना चाहिए था । जन की भलाई चाहनेवाले किसी सामाजिक दल ने भी अपनी मांग के रूप में रोकधाम ए आबादी को सरकार के पेशे नज़र न रखा है । बढ़ती आबादी ने काम की बढ़ोतरी को कई गुना बढ़ा दिया । आज मज़दूर सडकों पे उतरे हैं । काम नहीं है तो खाना दे दो । मज़दूरों के जनवादी अगुओं व साहित्यकारों ने भी कभी यह मांग न की कि आबादी रोको, मज़दूरों की भलाई चाहो, वतन को बचाओ । आबादी ने कई सालों से मज़दूरों के कामों को कत्ल कर दिया है । मज़दूर युनियन इस मांग पर गहरी खामोशी में है । इसलिए नौकरियों की तादाद कम होती जा रही है । काम का कम होना व काम का खोना फ़ौरन ही भूख में तब्दील हो जाएंगे । हिन्दुस्तान में गरीबदासों की पैदायशी हर लम्हा होती रहेगी ।

सरमायेदार व पूंजीपति चाहते हैं कि समाज में मज़दूरों की तादाद ज़्यादातर बढ़ जाये इससे कम वेतन, मज़दूरी, या तनख्वाह पर उन्हें अपना काम चलाने केलिए मज़दूरों को मिल जाय । सरमायेदार पूँजी का विकेन्द्रीकरण कभी नहीं चाहता है । इसलिए बढ़ती आबादी बढ़ने की चाहत में वह ज़िन्दा रहेगा । वैसे ही मज़हबी अगुए भी अपने अपने लोगों से ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों की पैदायशी केलिए आह्वान करते रहते हैं । उनकी उम्मीद है कि अपने मज़हब के लोग दुनिया में ज़्यादा रहें । उनकी ज़िन्दगी की हालत पर उन्हें कोई फ़िकर नहीं है । मगर साम्यवादी जनवादी जम्हूरों, अगुओं, सांसदों व साहित्यकारों की खामोशी खूब अजीब लगती है ।

जम्हूरी निज़ाम यानी जनवादी व्यवस्था इन्सानी ताकत पर पूरा भरोसा रखती है । ताकत ए इंसान से ही वर्तमान पूंजीवादी निज़ाम में इन्कलाबी तब्दीलियां ला सकती हैं । नागार्जुन का 'गरीबदास' उपन्यास उसकी ओर इशारा करता है । समता की तड़प जनवाद की जान है । ग्यारह उपन्यासों की रचना करके समाज की कई मसायिलों को सुधारने की भरसक कोशिश उनके उपन्यासों में मौजूद है । हर साल पूरी दुनिया में दिन ए आबादी (जानसंख्या दिवस) मनाया जा रहा है । जुलाई ग्यारह दिन ए आबादी है यह कितने लोग जानते हैं ? 1989 ईस्वीं में संयक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने इसकी शुरआत की है । मगर तह ए दिल से यह कह सकते हैं कि कहीं भी यह जश्न के रूप में मनाया नहीं जाता है । इसपर रार की ज़रुरत नहीं है 'हम दो हमरेलिए दो' यह महज़ एक नारा बन गया है ।

पहले उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' के ज़रिए नागार्जुन ने हिन्दुस्तान की बेवा औरतों की हकीकत समाज के सामने रख दी है । बेवा 'गौरी देवी' कैसे कैसे अत्याचार और ना इंसाफी को बर्दाश्त कर लेती है ? फिर कैसे कैसे इसकी मुकाबला करती है ? इसकी जीती जागती तस्वीर नागार्जुन ने इसमें खींची है तो 'बलचनमा' उपन्यास किसानों की सियासी व समाजी बेदारी का बयान करता है । 'नई पौध' उपन्यास बेमेल शादी की दास्तान बताता है तो 'बाबा बटेसर नाथ' उपन्यास दलित समाज की दर्दनाक हालत को दर्शाता है ।

माछुआ ज़ात के संघर्ष को 'वरुण के बेटे' नामक उपन्यास ज़िक्र करता है तो 'दुखमोचन' अलग ढंग से 'टमका कोईली' गांव के किसान जनांदोलन का परिचय देता है । 'कुंभीपाक' उपन्यास समाज में फैली जिस्म फरोशी को पेश करता है । अब तक के उपन्यासों से अलग एक उपन्यास है नागार्जुन का 'हीरक जयंती अभिवादन' । इसमें उपन्यासकार ने व्यंग्य शैली का इस्तेमाल किया है और समाज में जो भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी है, उनका राजनीतिक स्तर पर पर्दाफाश भी किया है । नागार्जुन का 'उग्रतारा' में नारी संघर्ष है तो 'इमरतिया या जमनिया का बाबा' में दुष्ट और भ्रष्ट साधुओं की चालाकी का बयान है । 'नई पौध' उपन्यास में बेमेल शादी का बयान है तो 'पारो' उपन्यास में अनमेल विवाह का नतीजा है, साथ ही साथ 'पारो' में बिहार के मैथिली जनपथ में चली आ रही शादी की गलत परंपराओं को भी दिखाया गया है । 'गरीबदास' उनका अंतिम व ग्यारहवां उपन्यास है । इस उपन्यास की सबसे बड़ी खूबी है कि नागार्जुन ने अपनी ख्वाहिशों को साकार करने की कोशिश इसमें की है । गरीबदास एक अहतराम किरदार है, क्योंकि वह नागार्जुन का नुमाइन्दा है । दूसरे शब्दों में कहा जाय तो गरीबदास दर असल नागार्जुन का किरदार ए नुमाइशी है ।

उपन्यासकार ने गरीब पीड़ित व शोषित समाज में अपना जीवन बिताया था । वह उपन्यास का अहम व मरकज़ी किरदार है । अपने समाज में जीते हुए वह महसूस कर लेता है कि कई सालों से इस वतन में दलित शोषण का शिकार बनता जा रहा है । इसे कोई रोकता नहीं है, यह अब भी दरिया के बहाव के जैसे बहता रहा है । तालीम से ही अन्याय पर ताला लगाया जा सकता है । इस उम्मीद को मन में रखकर ही नागार्जुन ने विद्या नामक किरदार की तामीर की है और इसके जरिए वह उस गांव में 'निवेदिता विद्यालय' खोल देता है । यह आसपास के दस बीस गांव में एक आदर्श विद्यालय है । नागार्जुन ने इस उपन्यास की शुरुआत बहुत ही सुंदर ढंग से किया है । उपन्यास की शुरुआत इस विद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस समारोह से होती है । इस समारोह की खासियत यह है कि इस विद्यालय से तालीम हासिल किए छात्रों ने खेती-बाड़ी व विद्यालय के छात्रावास के बारे में परिचय दिया।

इस विद्यालय के बारे में नागार्जुन ने खुद बताया है कि " कपिल ने सौ एकड़ भूमि देकर विद्यालय की आर्थिक स्थिति आज से पन्द्रह साल पहले ही पक्की कर दी थी अनाज, साग सब्जी, फल फूल, दूध दही आदि के मामलों में विद्यालय किसी बाहरी सहायता पर निर्भर नहीं था । सिंचाई का उसका अपना निज़ाम था । दो विशाल कुए थे, जिस पर पर्पिंग सेट के सहारे खेती बागवानी और आवश्यक

इस्तेमाल के लिए काफी पानी निकलता रहता था। पाँच अध्यापक अध्यापिका थे। एक एक को अलग-अलग क्वार्टर्स मिला था " (1) नागार्जुन ने तालीम के इस विद्यालय के द्वारा गांव को सुधारने का बीड़ा उठाया है। अपने दिल की उम्मीद को साकार करने के लिए उपन्यास में उन्होंने अनेक किरदारों का सृजन किया था। 'गरीबदास' में आम आदमी का चित्रण ही ख़ास तौर पर हुआ है। आम आदमी सब कहीं शिकार सा दिखाई दे रहा है। हर दिन किसी न किसी मामले में उसे शिकारी को बर्दाश्त करना पड़ता है। 'हरी नगर' में रहने वाले हरिजन होते हैं। हरिजनों के घर व आंगन बहुत छोटे छोटे होते हैं। आंगन गंदे भूरे भरे गलियारे हैं। वे जात से चमार है। वे ईमानदार व मेहनती आदमी हैं। औरों को धोखा देना वे अपनी ज़िन्दगी में नहीं चाहते हैं। वे ईमानदारी से अपना काम करते हैं और कर्ज लेकर अपना धंधा चलाते हैं। अहम रकम के साथ सूद न लौटा पाने से वे बैंक के शिकार बन जाते हैं। 'गरीबदास' में सामाजिक बेमेल का चित्रण भी हुआ है। समाज में बढ़नेवाली जातीयता व सामाजिक भेदभाव की वजह से ही समाज में बेमेल फ़ैल जाता है। छोटी बड़ी जाति के बीच के संघर्ष के कारण समाज में गंदगी बढ़ जाती है। सामाज का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इंसान को इंसान की तरह देखने की भावना गुमसुम हो जाती है। इसके बारे में खुद नागार्जुन लिखते हैं कि " पुलिस विभाग में नियुक्तियों, तबादलों, प्रमोशनों का आधार भी खास - खास जातियों के हितों को सामने रखकर ही बनाया जाने लगा था। योग्यता की उपेक्षा पहले से ज्यादा होने लगी। " (2)

जातीयता हर इंसान के भीतर विकृत मानसिकता पैदा कर देती है। सरकारी संस्थाओं में जातीयत के नाम पर बेमेल ही बेमेल दिखाई देता है तो कौन उसे सुधार सकता है ? सुधारने वाला खामोश है, चुप है। यह सियासी हार है और इस हार को आगे दिखाने में नागार्जुन ज़रूर ही कामयाब हुआ है। हजारों सालों की जातीयता ने इस वतन के समाज के स्वास्थ्य को बिगाड़ दिया है। उच्च जाति के लोगों द्वारा निम्न व निम्न मध्यवर्गीय लोगों का शोषण अब भी किया जा रहा है। इस उपन्यास में 'लक्ष्मण दास' नामक एक निम्न जाति का किरदार है और लक्ष्मण दास के आंखों में जब गरीबदास ने आंसू देखे तब गरीबदास कहता है यह आंसू है ... हज़ार ... हज़ार वर्षों से अच्छूतों की समूची जातियां इसी तरह आंसू बहाती आ रही हैं । जातीयता से समाज में अविश्वास फ़ैल जाता है। लोग घबराए हुए जी रहे हैं। भगत गरीबदास से दबे शब्दों में कहता है दहशत के मारे मानव गूंगे हो गए हैं

लोग आपस में नज़र नहीं मिलाते हैं। निज़ाम ए ज़ात ने इतना भयावह शक्ल हासिल कर ली है कि जिंदगी जीना दुश्वार की बात बन गई है। गरीबदास हमेशा हमराज़ दोस्त बन कर उनके साथ हैं। नागार्जुन बता देता है कि जब तक समाज से वर्ग वैषम्य दूर न हो जाए तब तक समाज में अमन का आना ना मुमकिन है। जातीयता, गरीबी, सांप्रदायिकता ये तीनों जब साथ साथ मिल के अपनी अपनी खेल खेलने लगेंगी तो समाज व लोग जंगली आग में पड़े परिंदों और बच्चों की तरह बन जाएंगे।

हरी नगर में जो निवेदिता विद्यालय है वहां के छात्रों को महात्मा गांधी और डॉक्टर अंबेडकर के आदर्शों को अपनाने का सिफारिश ही दिया जाता है। गरीबदास सोचता है कि यह दलित शोषित पीड़ित वर्ग भी बड़े चाव और लगाव से कौमी जश्न में भाग लें। लेकिन हरिजनों को तिरस्कार ही मिल जाता है। वे भी अपने वतन की तामीर मे खून व पसीना बहाते हैं। निवेदिता विद्यालय ऐसा एक आदर्श विद्यालय है वहां किसी भी नेक काम केलिए छात्रों को गरीबदास के अगुए में पुरस्कार दिया जाता है और समारोह में बच्चों का तारीफ के साथ हौसला भी बढ़ाया जाता है।

कपिल भी गरीबदास की तरह जनवादी विचारधारा का किरदार है। वह बड़ा किसान है। उसने अपनी सानवी तालीम काशी से हासिल की है। उसने अपनी सौ एकड़ ज़मीन निवेदिता विद्यालय केलिए दान दी थी। मंगल, जुमेरात व शनिवार को वह स्कूल में ही रहता था। माया जनवादी विचारधारा के साथ चलनेवाली नारी किरदार है। उसका अवामी रिश्ता व्यापक है। नागार्जुन ने उपन्यास के जरिए यह भी दर्शाया है कि बड़े तबके के लोग भी जनवाद का हमसफर हैं। मिसाल के तौर पर ठाकुर सदानंद को दिखा सकते हैं। वह बड़ा जमीन मालिक हैं और कपिल के साथ रहकर काश्तकारों की सिंचाई व आबपाशी का बंदोबस्त करने में हिचकता नहीं है। ठीक तरह की निज़ाम ए आबपाशी न होने के कारण खेती की बरबादी के कारण खुदकुशी करनेवाले काश्तकारों की ख़बर देश के कोने कोने से पेश आती है। नागार्जुन की उम्मीद है कि काश्तकारों की भलाई केलिए गांव गांव में आबपोशी का निज़ाम होना चाहिए।

जनवादी साहित्यकार अपनी व्यवस्था के जबर व तानाशाही के सिर्फ दर्शक हैं नहीं उनके भोक्ता भी हैं। नागार्जुन गरीबी में ज़िंदा रहे, गरीबी से लड़ते रहे, पीढ़तों व शोषितों के साथ रहते रहे। लड़ने केलिए हमें ताकत चाहिए, ताकत हम तालीम के जरिए ही हासिल कर सकते है। इसलिए ही नागार्जुन ने दलितों में होने वाली तालीम की कमी का बयान किया है। साथ ही साथ दलितों पर होनेवाले जुल्मो सिताम की पैनी तस्वीर खींची है। उच्च वर्ग की मानसिकता के बारे में नागार्जुन अपना नुमाइंदा किरदार गरीबदास के जरिए उपन्यास में यों लिखा है कि " गरीबदास ठुमक कर खड़े हो गए, हाथ उठाकर अपनी परछाई से बोले, तू उसका क्या कर लेगा ? मालिक लोग चमारों की बस्ती को फूंक देंगे, सौ पचास इंसानों को जलाकर राख कर देंगे..... तो भी मालिक लोगों का तू क्या बिगाड़ लेगा ? थाने का दारोगा उन्हीं की बिरादरी का है, यह खुलेआम उनकी तरफदारी करता चलेगा " (3)

नागार्जुन बताते हैं कि यह वर्तमान व्यवस्था का दमन है । दारोगा की बिरादरी तानाशाही की मिसाल है। व्यवस्था में कानून होने के बावजूद भी दलितों को अपना जीवन जीने के लिए लड़ना पड़ता है। कानून तो है मगर अमल में लानेवाले खुलेआम शिकारी का हिमायती बन जाने पर कमज़ोर दलितों के सामने कानूनों का खोखलापन ही पेशे नजर आएगा। कानून मज़बूत है वह कमजोरों के साथ

रहने पर कमज़ोर भी मजबूत बन जायेंगे मगर मजबूत के साथ कानून रहे तो कमज़ोर क्या करेगा ? यही दलितों का वर्तमान है। सबसे कर्बनाक खबर यह है कि कानून चलनेवाला दारोगा जब सारमाएदारों का पक्षधर बन जाता है, कमज़ोर को इंसाफ नहीं मिल जाता है। लोगों का नुमाइंदा अगुआ संसदीय सदस्य कमज़ोर दिलवाला हरिजन है। उसके अपने नीचे ज़्यादातर बड़े अफसर उच्च कुल के होते हैं इसलिए वह भी बेचारा बन जाता है। गरीबदास का यह कहना वर्तमान दलित, हरिजन लोगों की वर्तमान सच्चाई है। नागार्जुन ने अपने नुमाइंदा किरदार गरीबदास के जरिए वर्तमान समाज के कानून के खोखलेपन का फर्दाफाश किया है।

बाढ़ कितनी भी बड़ी हो , अकाल कितना भी बड़ा हो, महामारी कितना जानलेवा हो मगर हमें अपने जीने के हौसले को कभी भी ना छोड़ना चाहिए। जीने की अपनी जिजीविषा को किसी के भी सामने कत्ल करने का हक़ भी हमें नहीं है। लगातार संघर्ष में पड़े हुए कमज़ोर लोगों के दिल में निराशा का कालेपन फैल जाना मामूली बात है। एक जागरुक कलाकार के नाते नागार्जुन ने अपने किरदारों में जीने की जिजीविषा को भरपूर भर दिया है।

नागार्जुन दलितों व हरिजनों को अपने पैरों पर खड़ा करना चाहते हैं। इसीलिए उन्होंने हरि नगर के हरिजन लोगों के लिए निवेदिता विद्यालय खुलवा दिया है। हरिजनों के बच्चे वहां से तालीम हासिल कर देते हैं और इसकी निगरानी करने वाला है भगत लछमण भी जनवादी विचारधारा के साथ चलने वाला है। दलितों को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए गरीबदास खूब कोशिश करता है। अंबेडकर का जो आह्वान है संघटित हो जाओ, शक्तिशाली बनो यह इस विद्यालय के बच्चे अमल में लाए हैं। मछली पालन के लिए छोटी-छोटी दो तलैये हैं और मुर्गी पालन का एक अच्छा सा फॉर्म.... भी है । यह सब जन शक्ति का चमत्कार है, करिश्मा है। हरिनगर के लिए अगले पांच वर्ष के बीस छोटे-छोटे धंधे वहां चालू होने वाले हैं। इस प्रकार नागार्जुन ने दलित समाज को अपने पैरों पर खड़े रहकर संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहन दिया है। जिजीविषा के बिना, जीने की इच्छा के बिना, कोई भी संघर्ष नहीं जीत पाएगा। जिजीविषा को लेकर चलने वाले पात्रों में निर्गुण मंडल और भगत लक्ष्मण भी शामिल हैं l

गरीबदास जातीयता के बढ़ते शैतान के खिलाफ हमेशा लड़ना चाहता है। जब कभी हरिजनों पर ज़ुल्मो सितम व अत्याचार हुए सुनाई देते हैं उसके मन में संघर्ष की चिंगारियां फुट पड़ती हैं। वह अपने को गरीबदास नाम से पुकारा जाना चाहता है। " हमें अपना यही नाम प्यारा लगता है। हां, अगर आप लोगों को हमारे इस नाम पर एतराज हो तो जो जी में आए वही कहकर पुकारिए.... दरअसल बात यह है कि मुझे हरिजन शब्द पसंद नहीं है। अछूत जातियों के लिए दलित शब्द ही वाज़िफ है .....।" (4) यह नागार्जुन का , गरीबदास का क्रांतिकारी विचार है।

गरीबदास दलितों, आम लोगों, व निचले तबकों के लोगों को शोषण से मुक्त कराना चाहता है। उसका विचार सुदृढ़ है। उपन्यास में उसने अपना यह सुदृढ़ विचार खुद को संबोधित करते हुए व्यक्त किया है। अपने आप को संबोधित करके गरीबदास ने बोलना शुरू किया " बेटा हिम्मत से काम ले ! बेधड़क आगे की तरफ कदम बढ़ा.....! ऐसा नहीं करेगा तो दुनिया तेरा कचूमर निकाल देगी.... हरे धनिए की तरह पीसकर लोग तुझे चाट जाएंगे , सिर्फ फासला तय करना। सिर्फ चले जाना ही काफी नहीं होगा। नए सिरे से तुझे पगडंडियां बनानी होगी .... नई राहों के निर्माण की कोशिश में हो सकता है तेरे पंख बार-बार झुलम जाएँ, तू बुरी तरह से घायल हो जाए, नई राहें बनाने के सिलसिले में, यह सब झेलना होगा तुझे.....। " (5) नागार्जुन का गरीबदास के जारिए यह वक्तव्य वर्तमान दलित, पीड़ित, शोषित समाज के आम लोगों के लिए अपना संघर्ष वर्तमान में ही नहीं आईंदा भी जारी रखने का एक आह्वान है।

सन्दर्भ :

1. नागार्जुन : गरीबदास (संपूर्ण उपनयास , खण्ड 2 पृष्ठ संख्या 541)
2. वही : 548
3. वही : 559
4. वही : 543
5. वही : 560